सतत कृषि में लाभकारी है मसूर उत्पादन

ज्योत्स्नारानी प्रधान[1], हेमलता सिंह[1], गीता कुमारी[1], अमन जयसवाल[2] और आशुतोष कुमार[3]

"मसूर न केवल पोषण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, बल्कि यह किसानों के लिए एक लाभकारी और बहुउद्देशीय फसल के रूप में भी उभर रही है। इसकी खेती में सिंचाई एवं रासायनिक उर्वरकों की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता होती है, जिससे उत्पादन लागत घटती है और लाभांश में वृद्धि होती है। साथ ही, यह एक नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली दलहनी फसल है, जो मृदा की उर्वरता में सुधार कर फसलचक्र को संतुलित बनाए रखने में सहायक होती है। परिणामस्वरूप, किसान बेहतर उपज के साथ-साथ टिकाऊ खेती की दिशा में भी आगे बढ़ते हैं। भारत में पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने तथा दालों के आयात पर निर्भरता कम करने के प्रयासों के बीच मसूर की उपयोगिता पुनः केंद्र में आ गई है। यह अब केवल पारंपरिक दाल तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि पोषण समृद्ध, पर्यावरण अनुकूल और आर्थिक रूप से व्यवहार्य विकल्प के रूप में स्थापित हो रही है। बदलते जलवायु परिदृश्य में यह फसल देश की खाद्य प्रणाली को अधिक लचीला एवं टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।"

पोषण की दृष्टि से मसूर प्रोटीन, फाइबर, आयरन तथा फोलेट का सस्ता एवं सुलभ स्रोत है। विशेष रूप से महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण और एनीमिया की समस्या को कम करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही, शहरी उपभोक्ताओं में शाकाहारी जीवनशैली एवं स्वास्थ्यवर्धक खाद्य उत्पादों के प्रति बढ़ती जागरूकता ने भी इसकी मांग को बढ़ावा दिया है।

हालांकि, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव मसूर उत्पादन के लिए चुनौती बनते जा रहे हैं। पुष्पण एवं फली बनने की अवस्था में उच्च तापमान या असमय वर्षा बीज निर्माण को प्रभावित कर सकती है। इस परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिकों द्वारा जलवायु सहनशील किस्मों के विकास, जैविक खेती तथा जल संरक्षण तकनीकों पर निरंतर कार्य किया जा रहा है, ताकि मसूर को एक सुदृढ़ एवं टिकाऊ फसल के रूप में स्थापित किया जा सके।

स्पष्ट है कि मसूर के व्यापक प्रसार हेतु नीति, अनुसंधान एवं उपभोक्ता व्यवहार के बीच समन्वय अत्यंत आवश्यक है। यह फसल न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि पोषण सुरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक सशक्त विकल्प के रूप में उभर रही है।

फसल उत्पादन में योगदान

भारत में मसूर का योगदान दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्ष 2025-26 के उत्पादन अनुमान के अनुसार, देश में इसका कुल उत्पादन लगभग 17.33 लाख टन तक होगा, जो कुल दलहन उत्पादन (लगभग 275 लाख टन) का लगभग 5-6 प्रतिशत है। मसूर मुख्यतः रबी मौसम की फसल है और इसकी खेती लगभग 17-18 लाख हैक्टर क्षेत्रफल में की जाती है।

देश में मसूर का सर्वाधिक उत्पादन उत्तर प्रदेश (लगभग 36 प्रतिशत) मध्य प्रदेश (लगभग 35 प्रतिशत), पश्चिम बंगाल तथा बिहार (लगभग 10 प्रतिशत) में होता है। उत्पादन के साथ-साथ मसूर का महत्व

पोषक एवं स्वास्थ्यवर्धक

मसूर प्रोटीन, फाइबर, आयरन, फोलेट तथा अन्य आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का सस्ता एवं सुलभ स्रोत है। विशेष रूप से महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण तथा एनीमिया की समस्या को कम करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। यह न केवल आहार को पौष्टिक बनाती है, बल्कि संतुलित आहार का एक अनिवार्य घटक भी है, जो शरीर की प्रतिरक्षा क्षमता को मजबूत करने में सहायक होता है। पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, दैनिक आहार में मसूर को शामिल करना पोषण सुरक्षा की दिशा में एक प्रभावी कदम है। नियमित सेवन से यह हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने, मधुमेह नियंत्रण में सहायता करने तथा पाचन तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायक होती है। साथ ही, पर्यावरण की दृष्टि से भी यह एक टिकाऊ खाद्य विकल्प है, क्योंकि इसकी खेती में संसाधनों की कम आवश्यकता होती है।

[1]वनस्पति विज्ञान, पादप शरीर क्रिया विज्ञान और जैव रसायन विभाग; [2]माइक्रोबायोलॉजी विभाग, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर, बिहार 848125; [3]कृषि महाविद्यालय, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी-284003

मृदा स्वास्थ्य सुधार में भी है, क्योंकि यह एक नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली दलहनी फसल है, जो मृदा की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होती है।

इसके अतिरिक्त, मसूर कम पानी एवं सीमित उर्वरकों में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है, जिससे यह लघु एवं सीमांत किसानों के लिए अत्यंत उपयुक्त फसल बन जाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मसूर का बढ़ता उत्पादन न केवल देश की पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करता है, बल्कि दालों के आयात पर निर्भरता घटाने तथा किसानों की आय बढ़ाने के राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कृषकों को लाभ

कम लागत में अधिक आय

मसूर अपेक्षाकृत कम लागत वाली फसल है। प्रति हैक्टर लगभग 15,000-20,000 रुपये के निवेश में 10-12 क्विंटल तक उपज प्राप्त की जा सकती है। विपणन वर्ष 2025-26 के लिए सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य 7,000 रुपये प्रति क्विंटल है, जिसके आधार पर प्रति हैक्टर लगभग 65,000-80,000 रुपये तक आय संभव है। इस प्रकार शुद्ध लाभ 40,000-55,000 रुपये तक प्राप्त किया जा सकता है, जो कई अन्य रबी फसलों की तुलना में अधिक है।

जैविक लाभ एवं मृदा सुधार

मसूर एक दलहनी फसल होने के कारण नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता रखती है। यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मृदा में संचित कर मृदा की उर्वरता बढ़ाती है, जिससे अगली फसल को भी लाभ मिलता है तथा रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता घटती है।

पोषण, उत्पादन और पर्यावरण के लिए लाभकारी मसूर

सारणी: भारतीय पोषण संस्थान के अनुसार, 100 ग्राम पकी हुई मसूर में मौजूद पोषक तत्व

पोषक तत्व	मात्रा (100 ग्राम में)	प्रमुख लाभ
ऊर्जा	116 किलो कैलोरी	शरीर को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है
प्रोटीन	9.0 ग्राम	मांसपेशियों की वृद्धि एवं ऊतकों की मरम्मत में सहायक
फाइबर	7.9 ग्राम	पाचन क्रिया को सुधारता है एवं कब्ज की समस्या कम करता है
आयरन	3.3 मि.ग्रा	एनीमिया की रोकथाम में सहायक, हीमोग्लोबिन बढ़ाता है
फोलेट	180 माइक्रोग्राम	गर्भवती महिलाओं में शिशु के विकास के लिए आवश्यक
पोटेशियम	369 मि.ग्रा	रक्तचाप को नियंत्रित रखने में सहायक
मैग्नीशियम	36 मि.ग्रा	तंत्रिका तंत्र एवं हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी
जिंक	1.3 मि.ग्रा	रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है
विटामिन बी$_1$	0.2 मि.ग्रा	मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र के सुचारु कार्य में सहायक
वसा	0.4 ग्राम से कम	कोलेस्ट्रॉल मुक्त, हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

बदलती जलवायु में भी अनुकूल

भारत, विश्व का प्रमुख मसूर उत्पादक एवं उपभोक्ता देश है, फिर भी जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के कारण इसका उत्पादन मांग के अनुरूप नहीं हो पा रहा है। मसूर मुख्यत: रबी मौसम की फसल है, जो वर्तमान में तापमान वृद्धि और असमय वर्षा जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है। विशेषकर पुष्पण एवं फली बनने की अवस्था में उच्च तापमान परागण को प्रभावित करता है, जिससे बीज बनने की दर में कमी आती है। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के अनुसार, यदि पौधों की वृद्धि अवधि में तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाए, तो उपज में 30-50 प्रतिशत तक कमी संभव है। वैज्ञानिकों के अनुसार, मसूर की प्रजनन अवस्था तापमान के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती है और हल्की वृद्धि भी बीज निर्माण को बाधित कर सकती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिक पारंपरिक एवं आधुनिक आणविक तकनीकों की सहायता से जलवायु सहनशील किस्मों के विकास पर कार्य कर रहे हैं। उच्च तापमान सहनशीलता, शीघ्र पुष्पण तथा जल उपयोग दक्षता जैसे गुणों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। भाकृअनुप द्वारा विकसित आईपीएल-316 एवं आईपीएल-406 जैसी किस्में उच्च तापमान परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, जीनोम फेरबदल जैसी उन्नत तकनीकों के माध्यम से नई किस्मों के चयन एवं सुधार पर भी अनुसंधान जारी है। साथ ही, जैविक खेती एवं एकीकृत कृषि प्रणालियों में मसूर की भूमिका को सुदृढ़ करने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे यह एक बहुउद्देशीय टिकाऊ फसल के रूप में स्थापित हो सके।

जोखिम कम, लाभ अधिक

यह फसल कम सिंचाई, सीमित कीटनाशक उपयोग तथा न्यून देखभाल में भी अच्छी उपज देती है। यही कारण है कि यह फसल लघु एवं सीमांत किसानों के लिए उपयुक्त एवं कम जोखिम वाली आय का स्रोत मानी जाती है।

अवसर

बढ़ती उपभोक्ता मांग-विशेषकर प्रोटीनयुक्त आहार, जैविक उत्पाद एवं प्रसंस्करित खाद्य (जैसे हेल्दी स्नैक्स, आटा/पाउडर) ने मसूर के बाजार को व्यापक बनाया है। 'ईट राइट इंडिया' जैसी पहलों के चलते दलहनों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे किसानों के लिए मूल्य संवर्धन एवं बेहतर बाजार अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

मसूर अब केवल एक पारंपरिक दाल नहीं रही, बल्कि यह पोषण सुरक्षा, जलवायु अनुकूल खेती एवं ग्रामीण आय के स्थिरीकरण का सशक्त माध्यम बन चुकी है। बदलते कृषि परिदृश्य में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता यह दर्शाती है कि यदि शोध, नीतिगत समर्थन एवं उपभोक्ता व्यवहार में समन्वय स्थापित किया जाए, तो मसूर भविष्य की टिकाऊ एवं लचीली खाद्य प्रणाली का आधार बन सकती है।